राजाओं की पुस्तक के लेखक को समझना

प्रश्न: राजाओं की पुस्तक किसने लिखी?

राजाओं की पुस्तक के लेखक का नाम बाइबल में स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है, लेकिन यहूदी परंपरा यह मानती है कि भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने इन पुस्तकों को लिखा था। यह इस दृष्टिकोण के अनुरूप है कि लेखक ने यहूदा के पतन और बाबुल के बंदीगृह को स्वयं देखा, जो इस पुस्तक की मुख्य विषय-वस्तु – न्याय और पुनःस्थापन की आशा – को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

राजाओं की पुस्तक इस्राएल और यहूदा के राजाओं के शासनकाल का ऐतिहासिक और धार्मिक विवरण प्रस्तुत करती है। यह राजा सुलेमान से शुरू होती है – दाऊद का पुत्र – जिनका शासन इस्राएल के वैभव का शिखर माना जाता है (1 राजाओं 1–11)। इसके बाद यह वर्णन करती है कि कैसे सुलेमान की मृत्यु के पश्चात राज्य दो भागों में विभाजित हो गया – उत्तरी राज्य इस्राएल और दक्षिणी राज्य यहूदा
– जो लोगों की अवज्ञा और परमेश्वर की आज्ञाओं की उपेक्षा के कारण हुआ (1 राजाओं 12)।

धार्मिक दृष्टिकोण से, यह पुस्तक यह दिखाती है कि परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता या अवज्ञा के क्या परिणाम होते हैं। इस पुस्तक में हम देखते हैं कि कुछ धार्मिक राजा (जैसे कि दाऊद, हिजकिय्याह, और योशिय्याह) परमेश्वर का आदर करते हैं, जबकि

दुष्ट राजा (जैसे अहाब और मनश्शे) इस्राएल और यहूदा को मूर्तिपूजा और पाप की ओर ले जाते हैं।

विशेष रूप से यारोबियाम, जो उत्तरी राज्य का पहला राजा था, मूर्तिपूजा को बढ़ावा देने के लिए कुख्यात है। उसने बेतेल और दान में सोने के बछड़े बनवाए ताकि लोग यरूशलेम जाकर उपासना न करें (1 राजाओं 12:28-30)।

1 राजाओं 12:28-30
“तब राजा ने सम्मति लेकर दो बछड़े बनवाए, और लोगों से कहा, ‘येरूशलेम जाना तुम्हारे लिए कठिन है। देखो, हे इस्राएल, ये तेरे परमेश्वर हैं, जिन्होंने तुझे मिस्र देश से निकाला
था।’ और उसने एक को बेतेल में रखा और दूसरे को दान में। यह
बात पाप का कारण बनी…”

एक महत्वपूर्ण धार्मिक विषय जो इस पुस्तक में उभर कर आता है, वह है कि कैसे इस्राएल पर परमेश्वर का न्याय उसके लगातार पापों के कारण आया। मूर्तिपूजा को बार-बार दोषी ठहराया गया है, जैसे कि हम 2 राजाओं 17:7-18 में देखते हैं, जहाँ उत्तर राज्य की

अस्सूरियों के हाथों हुई विनाश का कारण परमेश्वर की उपासना को छोड़कर विदेशी देवताओं की पूजा बताया गया है।

2 राजाओं 17:7-8
“यह इस कारण हुआ कि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया… और अन्यजातियों के रीति-रिवाज़ों पर
चले…”

यह विनाश व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में बताए गए वाचा के शापों की पूर्ति के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ चेतावनी दी गई थी कि अगर इस्राएल परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करेगा, तो उसे अन्यजातियों के बीच तितर-बितर कर दिया जाएगा।

परन्तु, न्याय के बीच भी, यह पुस्तक परमेश्वर की दया और विश्वासयोग्यता को भी दर्शाती है। उदाहरण के लिए, यहूदा के राजा योशिय्याह को उसकी धार्मिक सुधारों और सच्चे उपासना की पुनःस्थापना के लिए सराहा गया है (2 राजाओं 22–23)। जब उसने परमेश्वर के सामने दीनता और पश्चाताप दिखाया, तब परमेश्वर ने उसे व्यक्तिगत रूप से दया दी (2 राजाओं 22:18-20)।

2 राजाओं 22:19-20
“…क्योंकि तू नम्र बन गया, और परमेश्वर के सामने दीन होकर
रोया, इसलिए मैंने भी तेरी प्रार्थना सुन ली है, यहोवा की
यही वाणी है…”

पुस्तक का अंत (2 राजाओं 24–25) यहूदा के पतन, यरूशलेम की विनाश, और बाबुल में बंधुआई का वर्णन करता है। यह वही घटनाएँ हैं जिन्हें यिर्मयाह जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने पहले ही घोषित किया था (यिर्मयाह 25:11-12)। हालांकि ये घटनाएँ न्याय की स्पष्ट मिसाल हैं, लेकिन वे एक आशा की किरण भी प्रदान करती हैं — कि मसीहा आएगा, और एक अनंत राज्य की स्थापना करेगा (यिर्मयाह 31:31-34)।

यिर्मयाह 31:31
“देखो, वह समय आ रहा है, यहोवा की यह वाणी है, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घराने से नई वाचा बाँधूंगा…”

राजाओं की पुस्तक से धार्मिक अंतर्दृष्टियाँ:

1. मूर्तिपूजा के दुष्परिणाम:

राजाओं की पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि मूर्तिपूजा एक मुख्य पाप है जो परमेश्वर के न्याय को लाता है (1 राजाओं 14:15-16)। इस्राएल और यहूदा, भले ही चुना हुआ राष्ट्र थे, परमेश्वर की उपेक्षा और मूर्तियों की पूजा ने उन्हें विनाश की ओर पहुँचाया।

निर्गमन 20:3-6
“तू मुझे छोड़ किसी और को ईश्वर न मानना… मैं यहोवा तेरा परमेश्वर, जलन रखनेवाला परमेश्वर हूँ…”

2. परमेश्वर की वाचा में विश्वासयोग्यता:

लोगों की बेवफाई के बावजूद, परमेश्वर अपने दाऊदी वाचा के प्रति सच्चा रहता है। यरूशलेम के विनाश के बाद भी दाऊद की वंशावली को जीवित रखा गया, जो अंततः मसीहा में पूरी होती है।

2 राजाओं 25:27-30
“…बाबुल के राजा ने यहोयाकीन को जेल से निकाल कर उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई, और उसे जीवन भर अपने दरबार में रोटी दी…”

3. भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका:

एलिय्याह, एलीशा, और यिर्मयाह जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने राजाओं और जनता को पाप से लौटने के लिए चेतावनी दी। वे परमेश्वर की वाणी का माध्यम थे — न्याय की घोषणा और आशा का संदेश दोनों देने वाले।

1 राजाओं 17-19, 2 राजाओं 2 — एलिय्याह और एलीशा की सेवाएं

4. राष्ट्रों पर परमेश्वर की संप्रभुता:

राजाओं की पुस्तक यह दर्शाती है कि परमेश्वर राज्यों के उठने और गिरने पर अधिकार रखता है। चाहे यहूदा और इस्राएल विदेशी

शक्तियों के अधीन हो गए, यह सब परमेश्वर की योजना का भाग था।

2 राजाओं 24:2
“यहोवा ने चक्कियों, अरामियों, मोआबियों और अमोनियों की
सेनाएँ यहूदा के विरुद्ध भेज दीं…”

5. पुनर्स्थापन की आशा:

हालांकि पुस्तक का अंत विनाश से होता है, लेकिन पुनर्स्थापन की आशा का भी संदेश उसमें निहित है। एक दाऊदी राजा के आने की प्रतिज्ञा की गई है — जो धर्म से राज्य करेगा। यह प्रतिज्ञा यीशु मसीह में पूरी हुई।

लूका 1:32-33
“वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहल

◌ाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन

देगा… और उसका राज्य अनंतकाल तक स्थिर रहेगा।”

यदि आप इन विषयों का गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं, तो आप यहाँ और पढ़ सकते हैं:
बाइबिल पुस्तकें: भाग 5

प्रभु आपकी अगुवाई करें जब आप उसके वचन में गहराई से उतरें।

Share on:
WhatsApp

Print this post